आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 4/दिसंबर 2022
Received:17/12/2022; Published:24/12/2022

खेल

- हूबनाथ

चलते हैं मोहरे
पिटते हैं मोहरे
मरते हैं मोहरे
कौन कितने घर चलेगा
कैसे चलेगा
कैसे मरेगा
कैसे जियेगा
यह कोई और तै करता है
जो तै करता है
वह कभी नज़र नहीं आता

नज़र आती हैं
कुछ उँगलियाँ
स्याह दस्तानों के भीतर
दस्तानों के रंग
बदलते रहते हैं
कभी स्याह
कभी सुर्ख़
कभी धानी
पर उँगलियाँ वही रहती हैं

दरअसल
वे उँगलियाँ नहीं
उँगलियों की शक़्ल में
शातिर दिमाग़ होते हैं
वे खेलते हैं मोहरों से
वे चलाते हैं
वे मारते हैं
वे जिताते हैं

भोले तमाशबीन
देख पाते हैं
सिर्फ़ मोहरे
काले और सफ़ेद

सिर्फ़
काले और सफ़ेद में बँटी
इस दुनिया के बाहर
और भी रंग होते हैं
यह पता ही नहीं
मासूम तमाशबीनों को
और हद तो यह है
कि ख़ुद तमाशबीन भी
आख़िरकार
एक तरह के
मोहरे ही तो होते हैं

जिन्हें
अलग अलग रंगों में बाँटकर
खेलती हैं
चंद उँगलियाँ
रंगबिरंगे दस्तानों में छिपी
तमाशबीन भी
बनते रहते हैं तमाशा
पिटते हैं
मरते हैं
हारते हैं

और अफ़सोस
इस तमाशे का
कोई तमाशबीन नहीं
सिर्फ़ उँगलियाँ
रंगबिरंगे दस्तानों की
सर्द क़ब्र में रेंगती

****